बेन्स्टैन भालू और दबंग

बेन्स्टैन भालू और दबंग

एक दिन माँ भालू , पिता भालू और भाई भालू आँगन में किसी काम में व्यस्त थे कि बहन भालू रोती हुई घर आई. उसका चेहरा गंदा था और उस पर खरोंचे पड़ी थीं और उसके कपड़े फट्टे हुए थे. “तुम्हें क्या हुआ?” माँ ने पूछा.

“प्लीज हमें बताओ,” पिता ने कहा.

भाई को विश्वास न हुआ कि बहन इतनी आहत दिखाई दे रही थी. उसके जम्पर और ब्लाउज फट्टे हुए थे. चेहरा और फर बुरी दशा में थे और गुलाबी बो भी लटक रही थी.

“क्या तुम गिर गई थी?” माँ ने पूछा. बहन ने सिर हिला कर नहीं का संकेत किया.

“क्या कोई दुर्घटना हो गई थी?” पिता ने पूछा. बहन ने फिर सिर हिला कर इनकार किया.

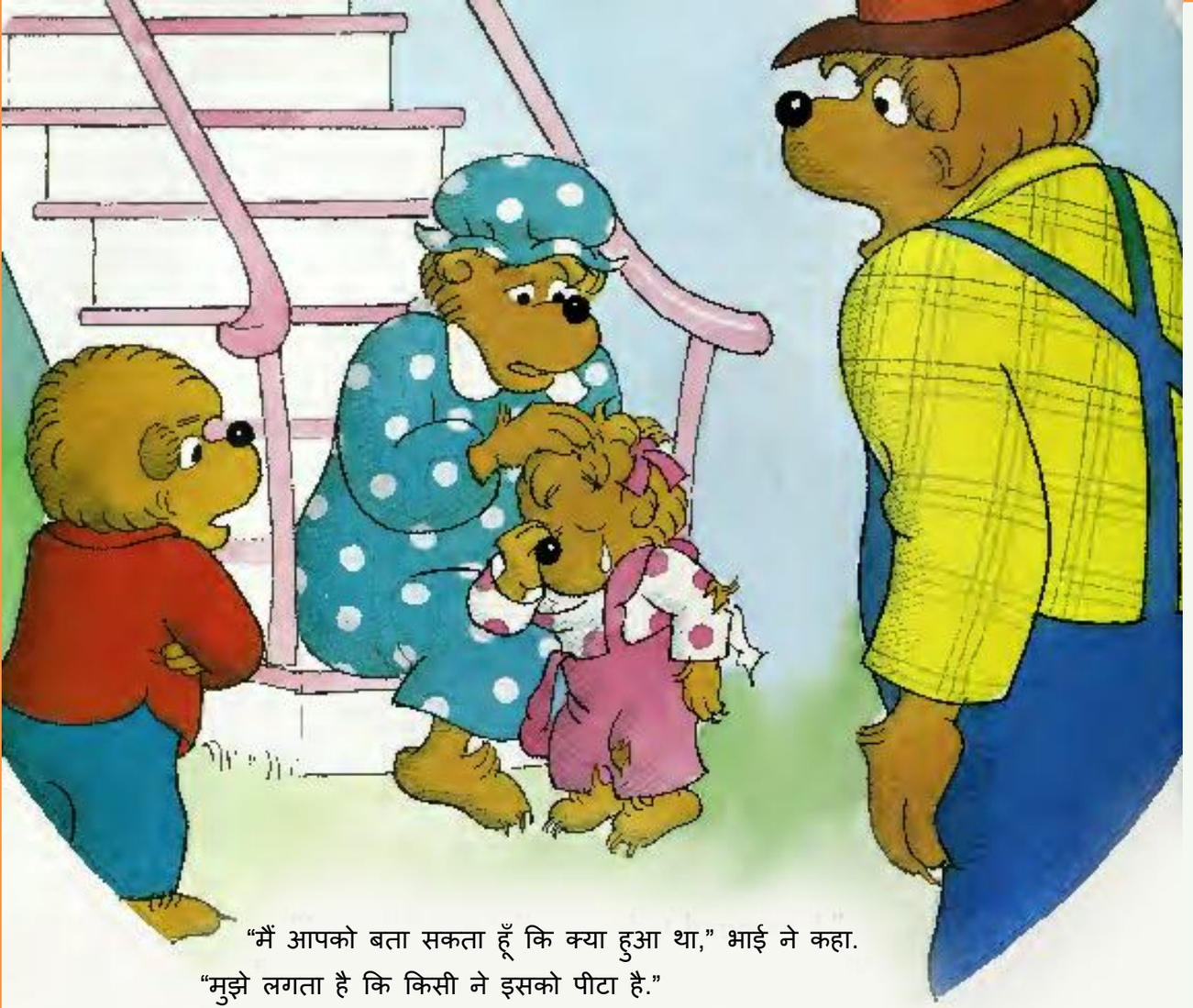

"मैं आपको बता सकता हूँ कि क्या हुआ था," भाई ने कहा. "मुझे लगता है कि किसी ने इसको पीटा है."

"किसी ने इसे पीटा? यह तो बहुत घृणित बात है!" पिता ने कहा.

"बहन जैसी नन्हीं, प्यारी बच्ची को कौन पीटना चाहेगा?" माँ ने कहा.

"कोई दबंग होगा," भाई ने कहा.

उस पल बहन ने कुछ देर के लिए रोना बंद किया और कहा, "भ...भ...भाई ठीक कह रहा है." इतना कह कर वह सुबकने लगी. "एक बुरे, नीच, शैतान दबंग ने मुझे पीटा-*बिना किसी कारण के*!" यह बात सोच कर उसे इतना गुस्सा आया कि वह फिर से रोने लगी.

माँ और पिता ने घर की सीढ़ियाँ चढ़ने में उसकी सहायता की और उसे ऊपर ले आये. थोड़ा पानी पीने के बाद वह कुछ शांत हुई और फिर उसने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था.

"लिज्ज़ी, क़ुईनी और मैं प्लेग्राउंड में गेंद के साथ खेल रहे थे कि वो शैतान, दबंग जिसका नाम टफ्फी है वहाँ आया-उसने टाँग अड़ा कर मुझे नीचे गिरा दिया. मैंने उठ कर कहा, 'तुम इस बात का ध्यान क्यों नहीं रखते कि तुम अपना पाँव कहाँ रख रहे हो?' इसके पहले की मैं समझ पाती कि क्या हो रहा था, डिशूम, डिशूम, डिशूम, और मैं ज़मीन पर जा गिरी और वह बदमाश टफ्फी मेरी छाती पर चढ़ कर बैठ गया और मेरे चेहरे पर मिट्टी मलने लगा."

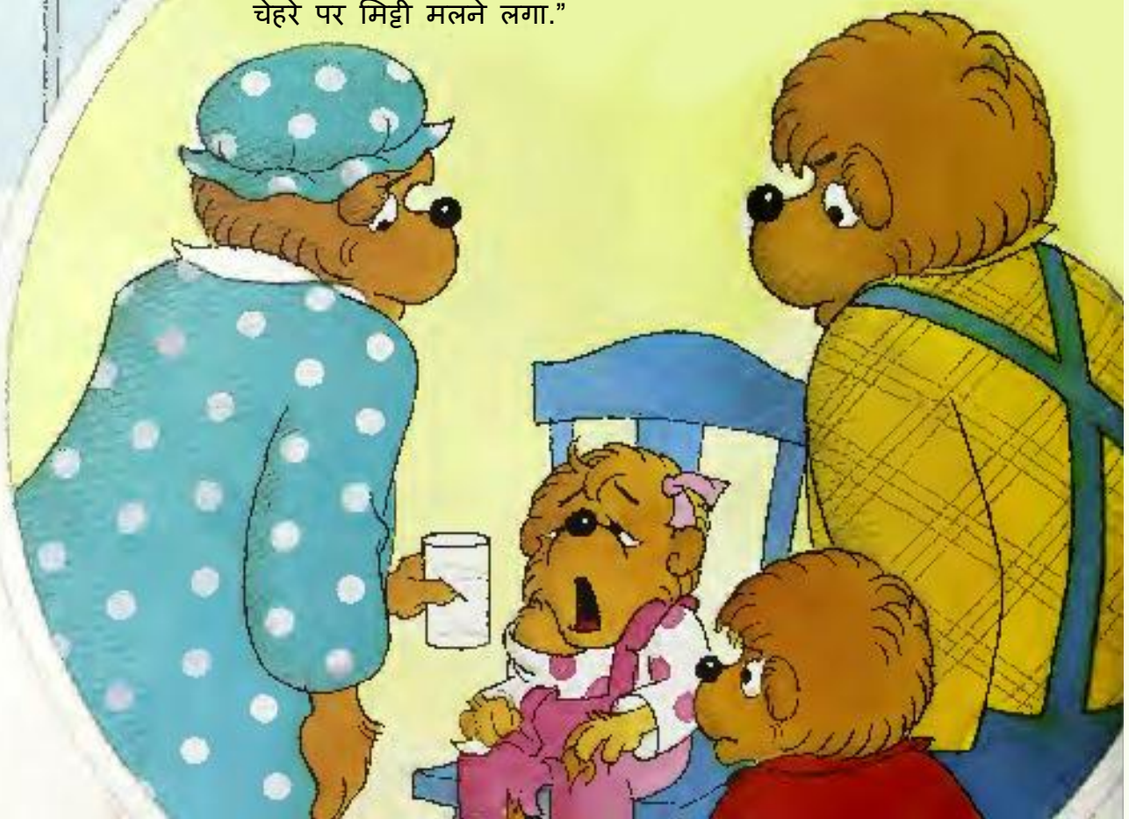

"इतना घृणित काम!" पिता ज़ोर से दहाड़े. "मेरी हैट कहाँ है? मैं अभी उस प्लेग्राउंड में जा रहा हूँ और....."माँ ने पिता को खींच कर एक ओर किया.

"तुम ऐसा कुछ भी न करोगे," माँ ने कहा.

"लेकिन कुछ तो करना होगा," पिता ने कहा.

"निश्चय ही," माँ ने कहा. "लेकिन इस समय हमें बहन की देखभाल करनी है." उन्होंने घूम कर भाई को पुकारा, "भाई! क्या तुम एक गीला कप.... भाई कहाँ है?"

"पता नहीं," बहन ने कहा. "एक मिनट पहले वह यहीं था और अगले मिनट वह चला गया."

लिज़्ज़ी और क़ुईनी अभी प्लेग्राउंड में ही खेल रहे थे जब भाई वहाँ पहुँचा. “टफ्फी नाम के दबंग को खिलाने के लिए मैं घूंसों का सैंडविच ले कर आया हूँ,” उसने कहा. “वह कहाँ है?”

“भाई,” लिज़्ज़ी ने कहा. “मुझे लगता है कि तुम्हें.....”

“गपशप करने का समय नहीं है,” वह गुर्राया. “बस उसकी ओर इशारा कर के मुझे बताओ और रास्ते से हट जाओ!”

लिज़्ज़ी ने अपने कंधे उचकाये और उस छोटी इमारत की ओर संकेत किया जहाँ लड़कों और लड़कियों के रेस्टरूम थे.

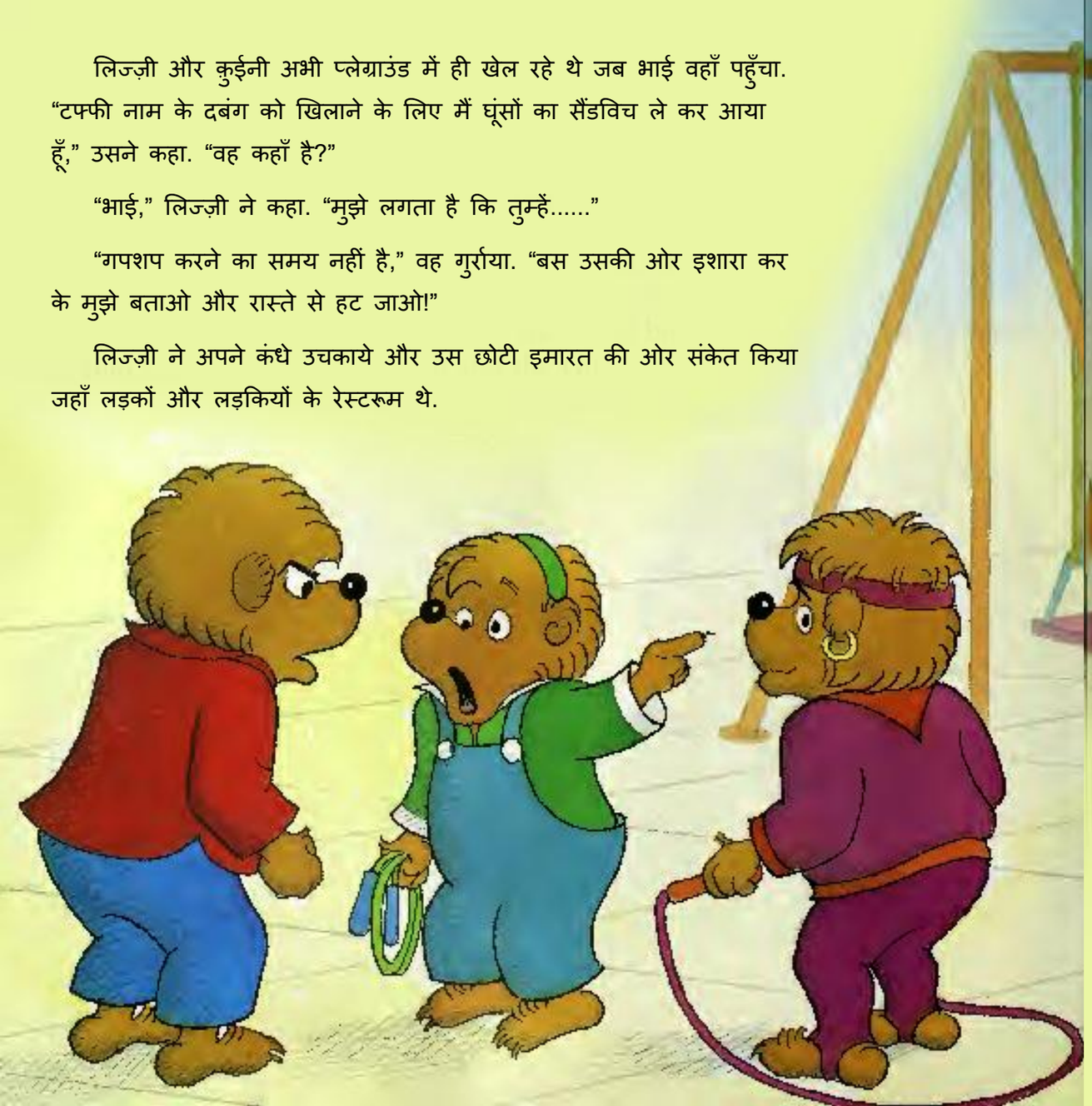

लेकिन वहाँ पर कोई न था. कोई भी नहीं, सिवाय एक नन्ही लड़की के जो लड़कियों के रेस्टरूम से बाहर आ रही थी.

लेकिन यह क्या! उस नन्ही लड़की ने जो टी-शर्ट पहन रखी थी उस पर छपा था *टफ्फी* !

"तुम टफ्फी हो?" भाई ने पूछा.

"हाँ," लड़की ने कहा. "क्या तुम्हें कोई एतराज़ है?"

"लेकिन-तुम एक लड़की हो!" भाई ने कहा.

"तुम्हें क्या लगा था कि मैं कौन हूँ—एक बैंगन?" टफ्फी बोली.

भाई बहुत ही आश्चर्यचकित हो गया था. जिस दबंग को वह प्लेग्राउंड से मार-मार कर भगाने वाला था वह तो एक लड़की थी और वह भी एक नन्हीं सी लड़की. शायद उसकी बहन से भी वह थोड़ी छोटी थी.

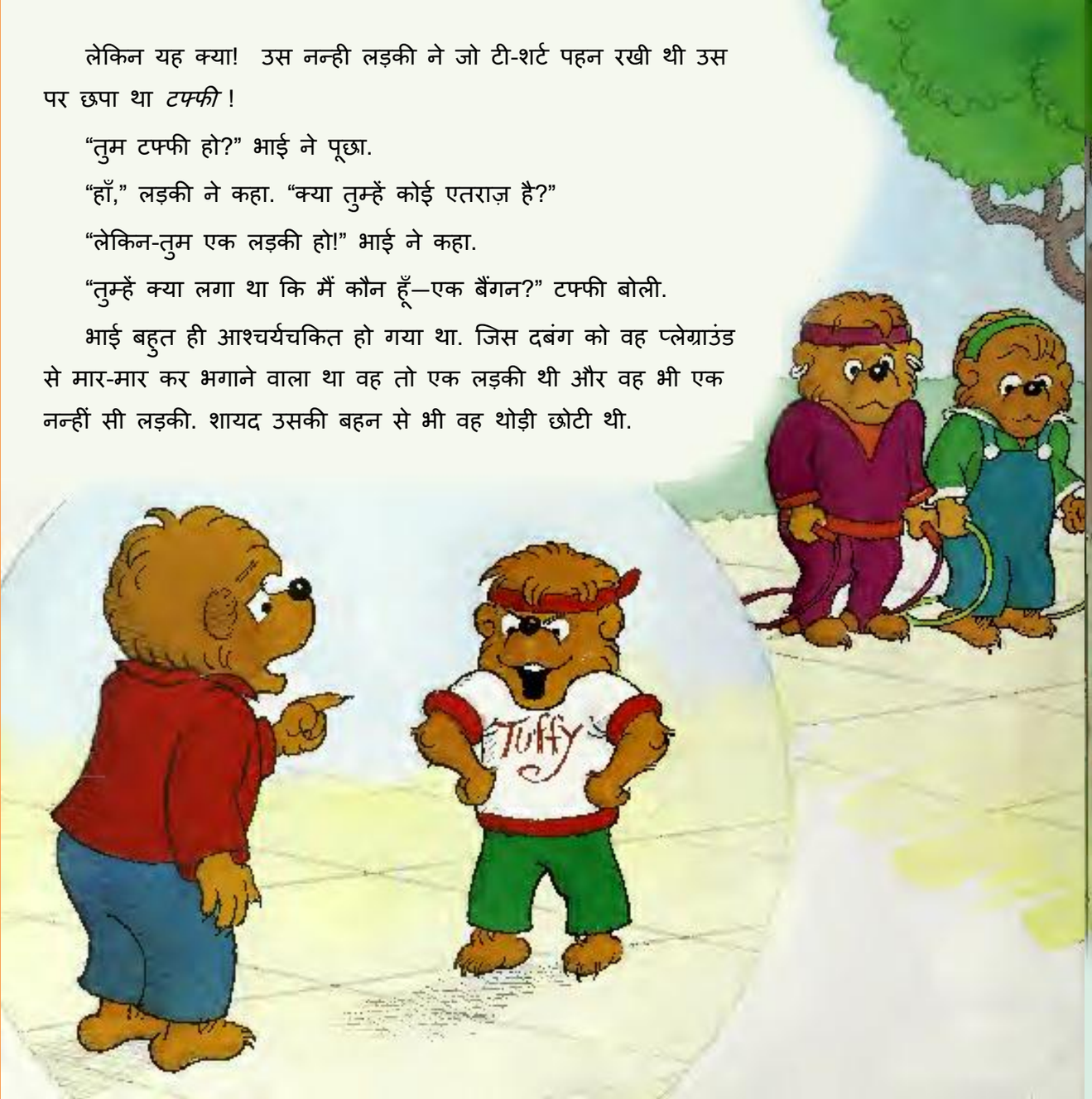

जब लिज़्ज़ी और क़ुईनी उनके निकट तमाशा देखने आये तो टफ्फी समझ गयी कि भाई कौन था. "हे!" उसने कहा. "तुम अवश्य उस मिस गुलाबी बो के बड़े भाई हो. उसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया इसलिए मैंने उसे थोड़ी शिक्षा दी. क्या तुम भी मेरे साथ उलझना चाहते हो?"

भाई वही करना चाहता था. लेकिन वह किसी सूरत में एक लड़की की पिटाई न कर सकता था. अगर वह करता तो वह भी एक दबंग ही बन जाता. वह चुपचाप घूमा और वहाँ से चला गया.

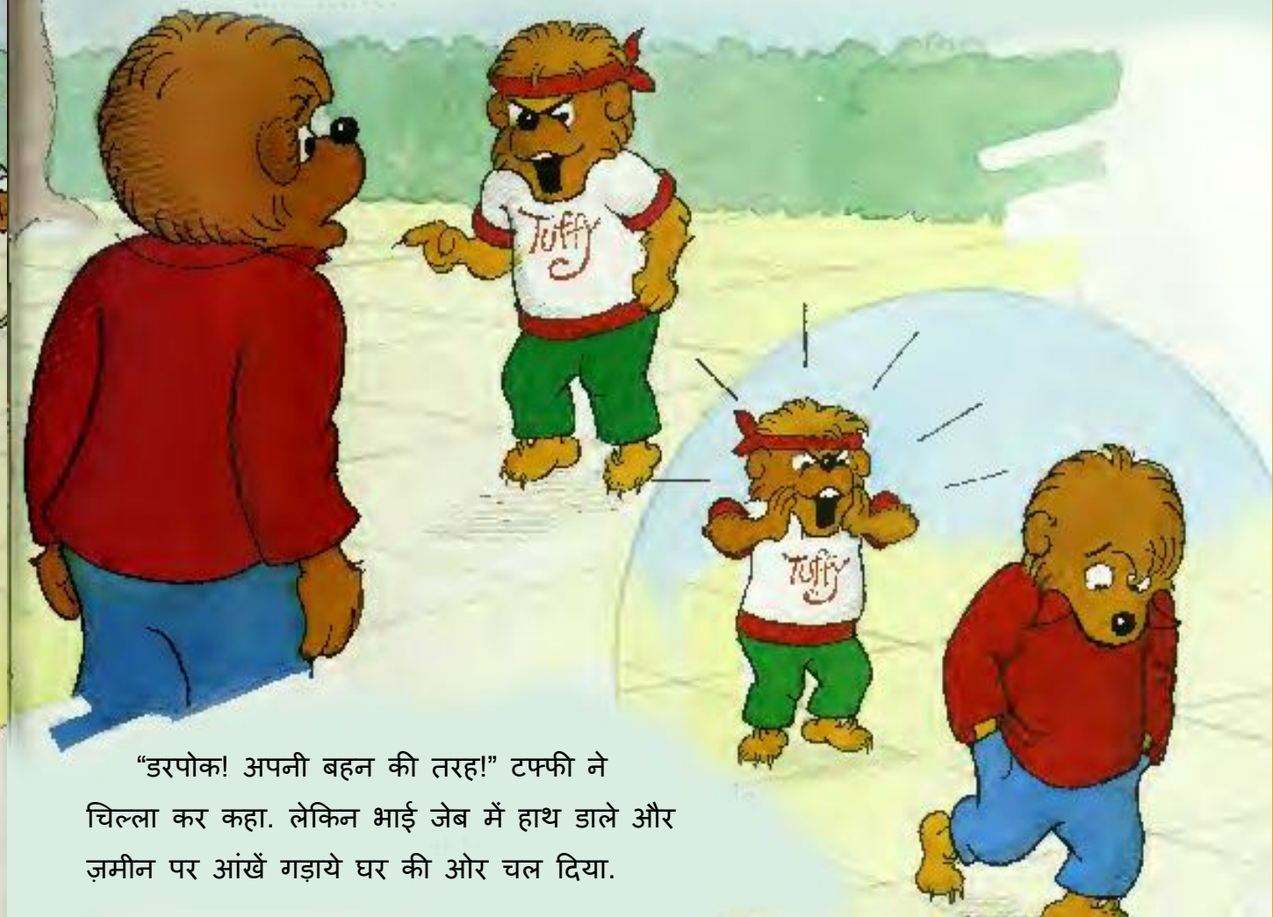

"डरपोक! अपनी बहन की तरह!" टफ्फी ने चिल्ला कर कहा. लेकिन भाई जेब में हाथ डाले और ज़मीन पर आंखें गड़ाये घर की ओर चल दिया.

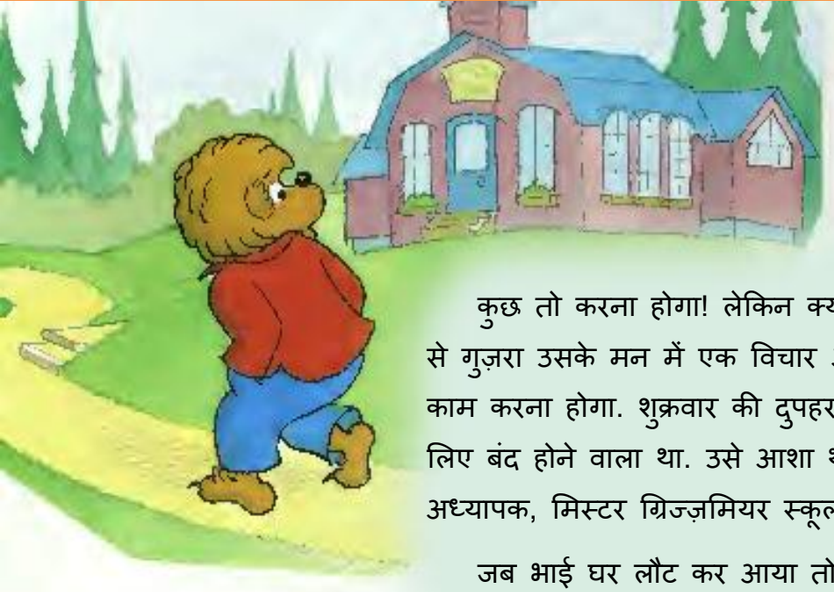

कुछ तो करना होगा! लेकिन क्या? जैसे ही वह स्कूल के निकट से गुज़रा उसके मन में एक विचार आया. लेकिन उसे झटपट अपना काम करना होगा. शुक्रवार की दुपहर थी और स्कूल सप्ताहांत के लिए बंद होने वाला था. उसे आशा थी कि व्यायामशाला के अध्यापक, मिस्टर ग्रिज़्ज़मियर स्कूल से अभी गये न होंगे.

जब भाई घर लौट कर आया तो वह एक बैग में कोई बड़ी सी चीज़ अपने साथ आया.

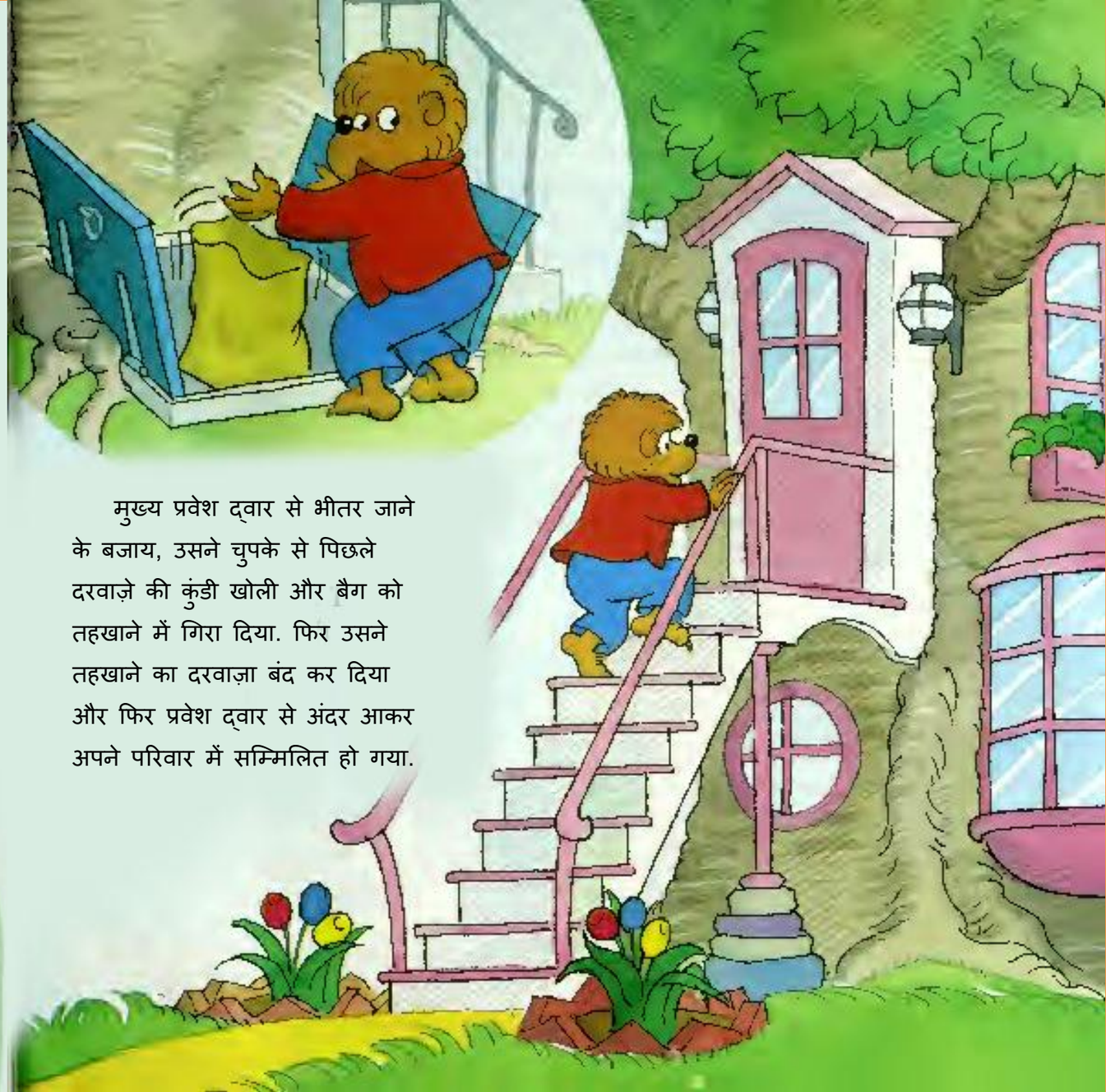

मुख्य प्रवेश द्वार से भीतर जाने के बजाय, उसने चुपके से पिछले दरवाज़े की कुंडी खोली और बैग को तहखाने में गिरा दिया. फिर उसने तहखाने का दरवाज़ा बंद कर दिया और फिर प्रवेश द्वार से अंदर आकर अपने परिवार में सम्मिलित हो गया.

“तुम कहाँ चले गये थे?” माँ ने पूछा. “यहाँ हम सब एक पारिवारिक बैठक कर रहे थे.”

“अर्र...मैं ज़रा प्लेग्राउंड देखने गया था,” भाई ने कहा.

“और निश्चय ही तुम्हें पता लगा होगा कि टफ्फी एक लड़की है,” माँ ने कहा. “हम इसी बात की चर्चा कर रहे थे और हम ने निर्णय लिया है कि बहन के लिए यही अच्छा होगा कि वह उस बुरी लड़की टफ्फी से दूर ही रहे. फिर तुम भी तो स्कूल में ही रहोगे. तुम बहन का ध्यान रख सकते हो. इस निर्णय के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?”

“ठीक ही,” भाई ने कहा. “लेकिन पिटाई तो बहन की हुई थी. वह क्या सोचती है?”

“ठीक है, शायद,” बहन ने कहा. “लेकिन मैं सच में टफ्फी के चेहरे पर, सीधे उसके नाक पर घूंसा मारना चाहती हूँ और फिर उसकी पिंडली को ठोकर मारना चाहती हूँ और फिर ज़मीन पर उसे पटक कर उसके.....”

“अरे बहन,” माँ ने कहा. “हम इस बात पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं.”

अच्छा है! भाई ने सोचा, बहन और मेरे विचार एक जैसे ही हैं.

डिनर के पहले भाई ने बहन को चुपके से एक नोट दिया. इस पर लिखा था, “आवश्यक! सात बजे नीचे तहखाने में मिलो.”

बहन जब अपनी गुप्त मीटिंग के लिए तहखाने में आई तो जो वस्तु उसने सबसे पहले देखी वह थी स्टूल पर रखा सूखी फलियों से भरा माँ का एक बड़ा बैग. उस पर एक कागज़ चिपका था जिस पर एक चेहरा बना था और लिखा था *टफ्फी*. उस बैग के पास उसका भाई खड़ा था और उसने वह बैग पकड़ रखा था जो वह स्कूल से लेकर आया था. उसके दूसरे हाथ में एक किताब थी.

“यह सब क्या है?” बहन ने पूछा.

"यह सब उस दबंग टफ्फी के कारण है. और अब तुम दुबारा उससे मार न खाओगी," भाई ने कहा.

"यहाँ तक तो सब ठीक है," बहन ने कहा.

"फलियों से भरा माँ का यह बैग हमारा पंचिंग बैग है," भाई ने बताया.

"पंचिंग बैग जिसका नाम टफ्फी है," बहन बोली. "उत्तम!" उसने बैग को ज़ोर से घूंसा मारा.

"बुरा नहीं है," भाई ने कहा.

"दूसरे बैग में क्या है?" बहन ने पूछा.

"बॉक्सिंग ग्लव्स," भाई ने उत्तर दिया. "और इस किताब का नाम है *आत्मरक्षा की कला*."

"यह सब तुम्हें कहाँ से मिले?" बहन ने पूछा.

"मिस्टर ग्रिज्ज़मियर से. मैंने उनसे कहा कि मेरे एक मित्र को एक दबंग ने परेशान कर रखा है. यह सब हमें सप्ताहांत के लिए मिले हैं. सोमवार की सुबह उन्हें वापस लौटना होगा."

"फिर हम किस की प्रतीक्षा कर रहे हैं?" बहन ने कहा. "**चलो अभ्यास शुरू करें**."

बहन आत्मरक्षा की कला बहुत
जल्दी सीख गयी. भाई की सहायता से
उसने सीखा की किस तरह

सीधा मुँह पर मुक्का मारा जाता है.

बायीं ओर से मुक्का मारा जाता है.

बायीं ओर से हुक किया जाता है.

और नीचे से ठोड़ी पर कैसे वार
किया जाता है.

और दूसरे के वार से कैसे बचा जाता है.

और उसने मुक्के मार-मार कर
फलियों के बैग की हालत खराब कर दी.

“अरे, तुम ने तो सप्ताहांत में बहुत कुछ सीख लिया है,” भाई ने सोमवार की सुबह बहन से कहा. “लेकिन एक महत्वपूर्ण बात तुम्हें याद रखनी है. तुम्हें अभी भी टफ्फी से दूर ही रहना है. वह बहुत ही नीच लड़की है. वह तो मुझ से भी लड़ने को तत्पर थी.”

“चिंता न करो,” बहन ने कहा. “जबड़े पर जहाँ उसने मुझे घूँसा मारा था वहाँ अभी भी मैं चोट को महसूस कर सकती हूँ.”

बहन टफ्फी से दूर रहने में सफल हुई. सोमवार सारा दिन वह उससे दूर रही.

और मंगलवार के दिन भी. लेकिन बुधवार के दिन रिसेस के समय टफ्फी ने इतना नीच और बुरा काम किया कि बहन को कुछ करना ही पड़ा. टफ्फी एक पक्षी के बच्चे को, जो अभी उड़ भी न सकता था, पत्थर मार रही थी. “ऐसा मत करो! बदमाश लड़की!” बहन चिल्लाई. “तुम उस पक्षी के बच्चे को घायल कर दोगी!”

“अरे, क्या यह मिस गुलाबी बो नहीं है!” टफ्फी ने कहा. “क्या तुम जानती हो? इसके बजाय तो मैं तुम्हें घायल करना चाहूँगी!”

घूंसा मारने के लिए मुट्ठी तान कर वह बहन की ओर दौड़ी.

लेकिन बहन भी तैयार थी. अपने जबड़े को बचाने के लिए उसने अपना बायाँ हाथ सामने की ओर और दायाँ ऊपर की ओर कर रखा था. जब टफ्फी ने दायें हाथ से घूंसा मारा तो बहन ने अपने को बचा लिया और फिर दायें हाथ से उसके नाक पर ज़ोर का वार किया.

इतनी शीघ्रता से की टफ्फी कुछ समझ ही न पाई. टफ्फी ने अपने को ज़मीन पर पाया और उसकी नाक से खून बह रहा था.

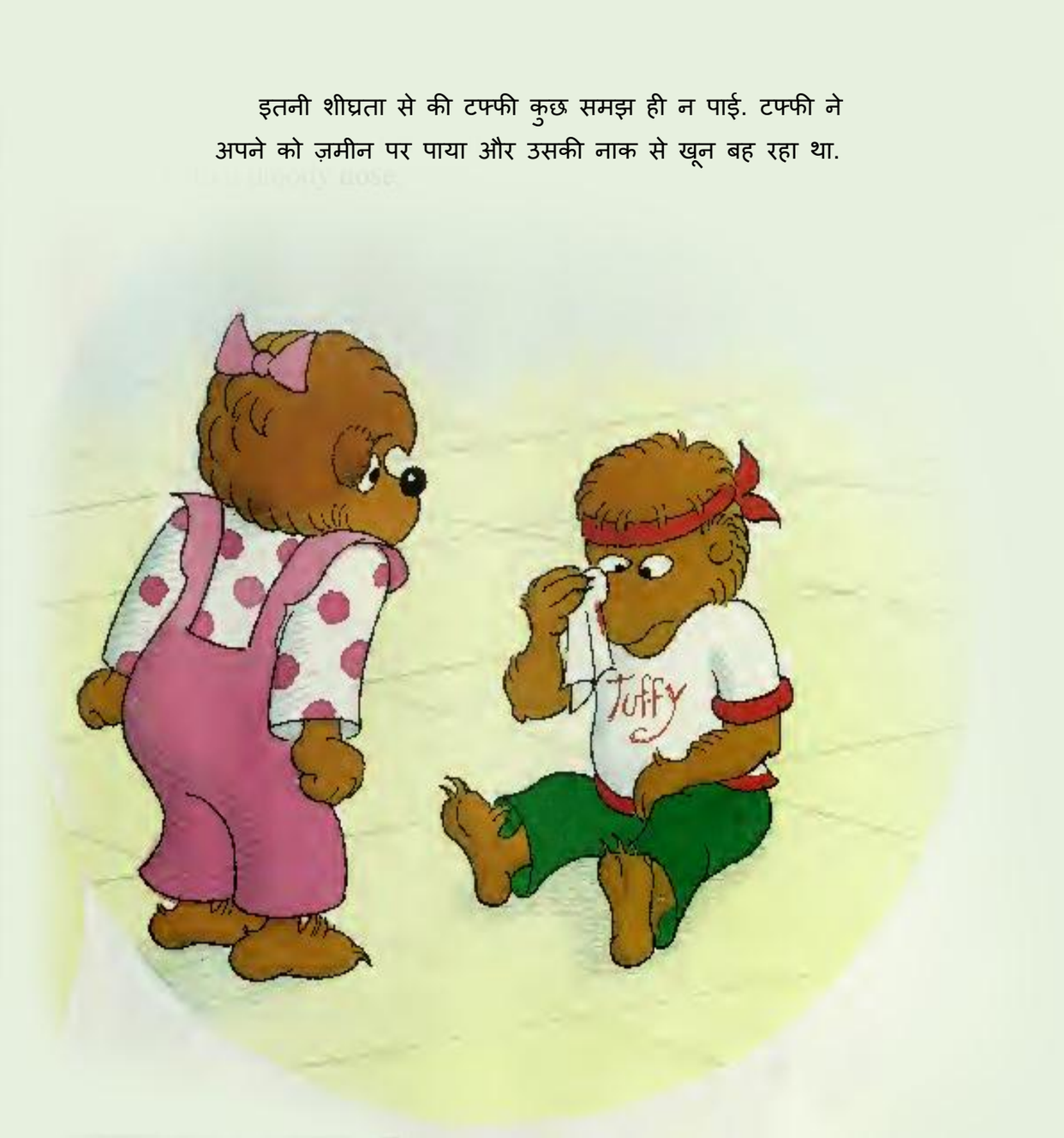

और उतनी ही शीघ्रता से एक अध्यापिका बहन और टफ्फी पर झपटी. वह दोनों को पकड़ कर स्कूल के अंदर ले गयी और उन्हें प्रिंसिपल के अनुशासन बेंच पर बैठा दिया.

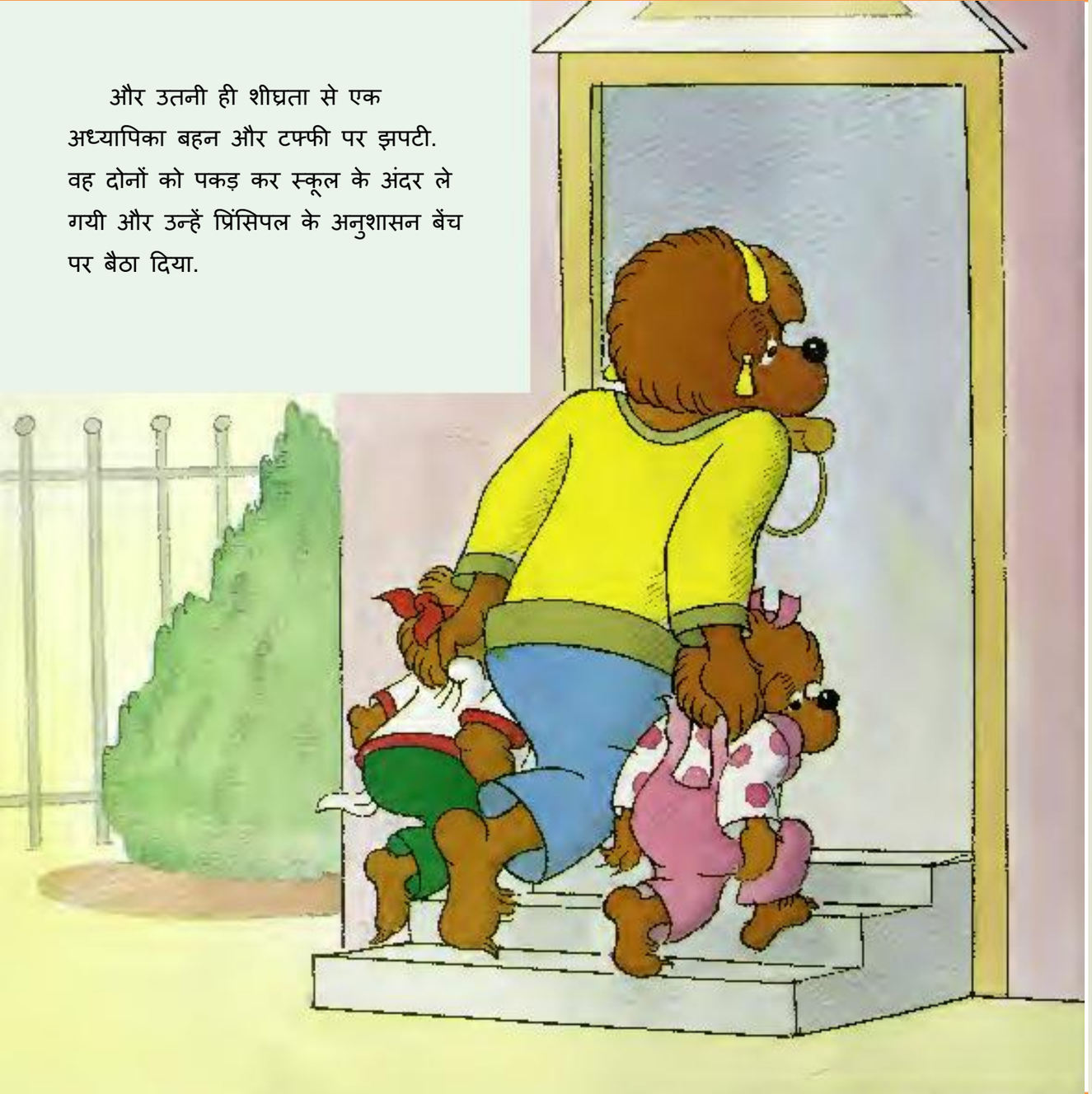

बहन इस बात से गौरवान्वित महसूस कर रही थी कि उसने पक्षी के बच्चे को बचाया था पर वह सहमी भी हुई थी क्योंकि वह प्रिंसिपल के प्रसिद्ध अनुशासन बेंच पर बैठी हुई थी. लेकिन जब उसने टफ्फी को रोते हुए देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गयी. “तुम क्यों रो रही हो? मैंने तो तुम्हें बस एक बार ही मारा था,” बहन ने कहा.

“मैं उस कारण नहीं रो रही,” टफ्फी बोली.

“फिर तुम क्यों रो रही हो?” बहन ने पूछा. वह समझ न पा रही थी कि टफ्फी जैसी उपद्रवी और नीच लड़की किस बात के लिए रो रही थी.

“अगर प्रिंसिपल ने मेरे माता-पिता को इसके बारे में बता दिया तो,” टफ्फी ने कहा, “मैं कहीं बैठ न पाऊँगी-लंबे समय के लिए.”

हम्म्म, बहन सोच में पड़ गई. शायद इसे घर में खूब मार पड़ती होगी. शायद इसलिए स्कूल में दूसरे बच्चों को मारना इसे अच्छा लगता है. लेकिन उसने इस के बारे में अधिक न सोचा.

उसे तो इस बात की चिंता थी कि उसके साथ क्या होगा. स्कूल के प्रिंसिपल, मिस्टर हनीकॉम, लड़ाई-झगड़े को लेकर बहुत कठोर थे.

अब ऐसा हुआ कि एक अध्यापक ने सारी घटना देखी थी. उन्होंने मिस्टर हनीकॉम को बताया कि बहन तो सिर्फ एक पक्षी के बच्चे को बचाने का प्रयास कर रही थी. इसलिए मिस्टर हनीकॉम ने बहन को एक चेतावनी देकर छोड़ दिया.

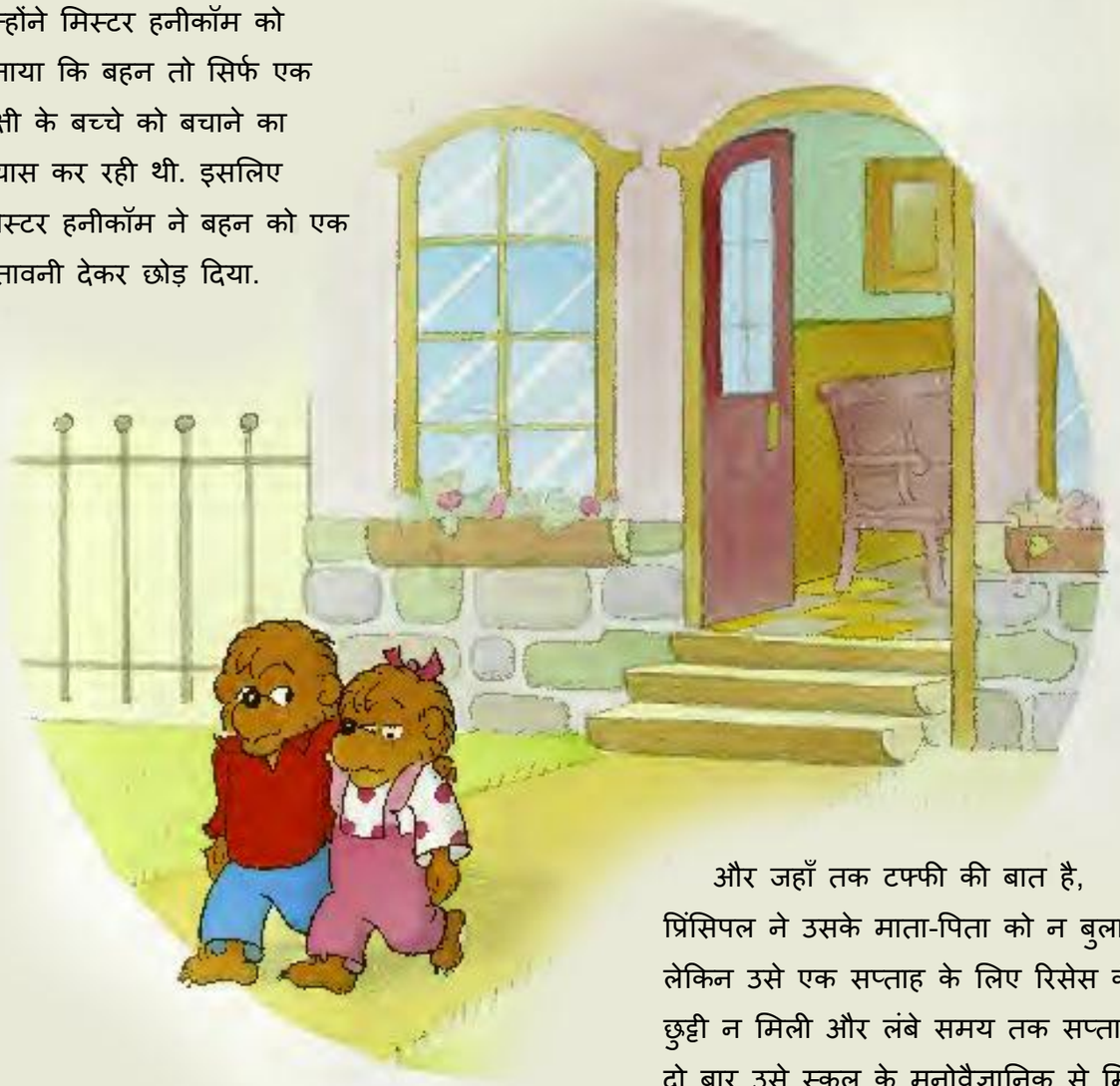

और जहाँ तक टफ्फी की बात है, प्रिंसिपल ने उसके माता-पिता को न बुलाया. लेकिन उसे एक सप्ताह के लिए रिसेस की छुट्टी न मिली और लंबे समय तक सप्ताह में दो बार उसे स्कूल के मनोवैज्ञानिक से मिलना पड़ा.

समाप्त